IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 3, January 2026
Impact Factor: 7.67

भारतीय ज्ञान परंपरा और निर्गुण काव्यधारा

डॉ. बृजेन्द्र कुशवाहा

अतिथि विद्वान, हिंदी- विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

सारांश: (Abstract)

भारतीय ज्ञान परंपरा एक प्राचीन और समृद्ध विरासत है जो वेदों, उपनिषदों, दर्शनशास्त्रों और भक्ति साहित्य से जुड़ी हुई है। निर्गुण काव्यधारा, जो भक्ति काल की एक प्रमुख शाखा है, इस परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह काव्यधारा निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर आधारित है और संत कवियों जैसे कबीर, रैदास और नानक द्वारा प्रतिपादित है। इस शोध पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा और निर्गुण काव्यधारा के बीच के संबंधों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें दार्शनिक आधार, सामाजिक प्रभाव और साहित्यिक योगदान पर ध्यान केंद्रित है। शोध से पता चलता है कि निर्गुण काव्य भारतीय ज्ञान परंपरा की निरंतरता को दर्शाता है, जो आत्मज्ञान, समानता और भक्ति के माध्यम से समाज को प्रभावित करता है।

कीवर्ड्स:(Keywords)

भारतीय ज्ञान परंपरा, निर्गुण काव्यधारा, भक्ति काल, संत काव्य, निर्गुण ब्रह्म, कबीर, उपनिषद, दर्शनशास्त्र, आत्मज्ञान, सामाजिक समानता।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-30939